eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में साम्प्रदायिकता का चित्रण

[1]मोनिका
[2]डॉ. ओमवती
[1]शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी. जे. कॉलेज, बड़ौत (बागपत)
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी. जे. कॉलेज, बड़ौत (बागपत)

Abstract

धर्म किसी भी देश, राज्य या समुदाय का एक बड़ा मुद्दा होता है। प्राचीन काल से ही धर्म किसी भी देश की राजनीति में आम जनता को प्रभावित करता रहा है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। संविधान में यह बात महत्वपूर्ण रूप से वर्णित की गई है। फिर भी समय–समय पर राजनेता अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए धर्म को मुद्दा बनाते हैं। क्योंकि भारत में विभिन्न धर्म और समुदाय के लोग निवास करते हैं तथा समय–समय पर उनकी भावना मुखर होती है। कुछ धर्म के लोग अधिक संख्या में तथा कुछ धर्म के लोग कम संख्या में निवास करते हैं। धार्मिक आधार पर कम जनसंख्या वाले लोग अल्पसंख्यक समुदाय में आते हैं।

भारत में मुस्लिम समाज अल्पसंख्यक समुदाय में माना जाता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में हमें विभिन्न रूप से धार्मिक व सांप्रदायिक भावना बिखरी हुई दिखाई देती है। मुस्लिम समूह के लोग एक दूसरे के साथ सांप्रदायिक एकता रखते हैं। परंतु सांप्रदायिकता देश व समाज के लिए खतरा बन गई है सांप्रदायिकता प्राचीन काल से ही हमारे देश में फैली हुई। प्रत्येक समय पर शासको ने अपना फायदा उठाने के लिए सांप्रदायिकता को और ज्यादा फैलाया है। हिंदू– मुस्लिम दोनों ही समुदाय अपने–अपने धर्म को लेकर कठोर हो जाते हैं तथा भाई–चारा भूल जाते हैं।

सार शब्द :– भारतीय सामाजिक परिदृश्य, अब्दुल बिस्मिल्लाह, कथा साहित्य, साम्प्रदायिकता का चित्रण।

Introduction

सांप्रदायिकता, नफरत और द्वेष भावना के संदर्भ में डॉ राधाकृष्णन का विचार प्रासंगिक लगता है, ''मनुष्यों में आपसी झगड़ों का अंकुर उसे पद्धति से सफेद पैदा होता है, जिसके अनुसार विभिन्न समूह के व्यक्ति दूसरों के संबंध में अपनी धारणा बना लेते हैं। कर्तव्य और न्याय के अपने आदर्शों को दूसरों से श्रेष्ठ समझते हैं।''[1]

अब्दुल बिस्मिल्लाह की राही मासूम राजा की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले साहित्यकार हैं। धर्म मानवता के लिए है न की मानवता धर्म के लिए। परंतु आज मनुष्य निजी स्वार्थ के लिए धर्म का दुरुपयोग कर रहा है। कथाकार इस तथ्य को उपन्यास 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' के माध्यम से वे बाकी वह निर्भीक रूप से सामने रखते हैं, ''शोर मचाती भीड़। एक ऐसा शोर जिसका आध्यात्म से कोई सरोकार नहीं। ठीक उसी प्रकार का शोर उसे वक्त भी होता है जब ताजिया का जुलूस निकलता है। धर्म दोनों ही अवसरों पर सड़क पर छाप हो जाता है, वह सारे आम सर के बल खड़ा हो जाता

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

है। लेकिन फिर भी लोग कहते हैं यह सत्य है और सिर्फ यही सत्य है। इस सत्य के लिए लोग कट मरते हैं।''[2]

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियो में भी संप्रदायवाद की भावना सामने आती है। बिस्मिल्लाह जी इस तथ्य को सामने रखते हैं कि पहले गांव में भाईचारा हुआ करता था। परंतु अब गांव में भी द्वेष भावना बढ़ती जा रही है। एकता का भाव हो गया है। धर्म के ठेकेदार इस भावना को लगातार बोल देते हैं। वर्तमान समय में धर्म व संप्रदाय लोगों के बीच इस कदर बढ़ रहा है कि गांव वाले भी 'आदमी और मनुष्य' तथा 'जल और पानी' में अंतर करने लगे हैं। 'अतिथि देवो भव' कहानी संग्रह की कहानी 'ग्राम सुधार'का पत्र कहता है, ''जल तो होता है गंगा का, जल तो होता है घड़े का, जो पवित्र होता है, शुद्ध होता है। और पानी होता है लोटीदार लोटे यानी बहाने का जिसे मुसलमान लोग उज्जू बनाते हैं और नाक छिनकते हैं।''[3]

संप्रदाय के नाम पर लोग छोटी–छोटी बातों पर एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं। भारत में मेले, पर्व, त्योहारो पर दंगा होने की प्रबल संभावना बनी रहती है। इन बातों से राष्ट्रीय एकता को खतरा बनता है। उपन्यास 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' का प्रसंग यथार्थ प्रतीत होता हैं, ''यहां मदनपुरा में दो गलियां ऐसी हैं जिनको लेकर बड़ा विवाद है। एक गाली ऐसी है जिसमें मुसलमान की आबादी बहुत ज्यादा है और हिंदू चाहते हैं कि दुर्गा की प्रतिमा इसी गली से होकर गुजरे। मुसलमान नहीं चाहते ऐसा हो वरना उनका ईमान शायद खतरे में पड़ जाएगा। दूसरी गली ऐसी है जहां हिंदुओं की आबादी ज्यादा है और उसे गली में मुसलमान ने एक इमाम चौक बना रखा है। वे वहां ताजिया बैठे हैं और हिंदू नहीं चाहते कि ऐसा हो, वरना उनकी आस्था पर शायद चोट पहुंचेगी। इस तरह हर साल दशहरे और मोहर्रम के अवसर पर इस सरकार के प्रशासन की वार्षिक परीक्षा हो जाती है।''[4]

लेखक के इन वाक्यों के माध्यम से धार्मिक सांप्रदायिकता को समझने में सहायता मिलती है। स्वतंत्रता के बाद के साहित्यकारों में अब्दुल बिस्मिल्लाह उसे श्रेणी में स्थान रखते हैं जो हिंदू–मुस्लिम समाज के रिवाज व परंपराओं को हमारे समक्ष लाते हैं। उनकी कथा साहित्य में मुस्लिम समाज का समूचा संसार दिखाई देता है। आजादी के बाद तथा वर्तमान समय का सच यह है कि राजनीतिक लोग अपने फायदे के लिए धर्म और संप्रदाय का प्रयोग करते हैं। आम जनता को लालच देकर उनका शोषण किया जाता है। कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह ने हिंदू व मुस्लिम झगड़ों का भी वर्णन किया है।

उपन्यास 'जहरबाद' के माध्यम से लेखक मुस्लिम धर्म के त्योहारो, पर्वो, मान्यताओं आदि को खुलकर सामने रखते हैं। उपन्यास 'दंतकथा' को आलोचक उपन्यास की श्रेणी में नहीं रखते परंतु लेखक ने इसके माध्यम से समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता का वर्णन किया है। उपन्यास का मुख्य पात्र एक मुर्गा है जो मनुष्य का प्रतीक है, एक ऐसे मनुष्य का प्रतीक है जो शुरुआत से लेकर अंत तक सांप्रदायिक ताकतों के खिलाफ खड़ा रहता है। मुर्गा स्वयं कहता है, ''दरअसल चोंच बांधने की कला में इस मनुष्य जाति का कोई जवाब नहीं। जिस भी प्राणी से इसे अपने खिलाफ बोले जाने का खतरा महसूस होता है यह उसकी चोंच को पहले ही बांध देता है।''[5]

मनुष्य धर्म व संप्रदाय के आधार पर ही किसी और मनुष्य को अपना समझता है। संप्रदाय का सहारा लेकर अपनी बेहतरी की उम्मीद करता है। यह तथ्य अगर लिखित वाक्य से चरितार्थ होता है,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

''अस्पताल में कोई नया डॉक्टर आया था। मुसलमान था। यह बात उसकी नेम प्लेट से साबित होती थी। दरवाजे के ऊपर लकड़ी की एक तख्ती पर लिखा था डॉक्टर मोहम्मद इस्लाम सिद्दीकी। नाम पढ़कर मतीन को यह आशा हो चली कि डॉक्टर साहब मुसलमान होने के नाते मुसलमान मरीज का कुछ ज्यादा ही इलाज करेंगे।''[6] इतना ही नहीं लेखक अपने कथा साहित्य में डंके की चोट पर हिंदू तथा मुसलमान दोनों पर प्रहार करते हैं।

विशेष रूप से बिस्मिल्लाह जी ने मुस्लिम समाज की कमजोरी को ढूंढकर सांप्रदायिकता का इलाज जानने का प्रयत्न किया है, ''इस समय दुकान में बड़ी भीड़ है। विक्की पान लगाई जा रहा है और बड़बड़े जा रहा है। लोग खूब हंसी ठठ्ठा कर रहे हैं। लतीफवा समझ गया कि पाकिस्तान जीत गया है। जब भी पाकिस्तान जीता है यह विक्की मुफ्त पान बांटने लगता है और हार की खबर सुनते ही दुकान बंद कर देता है।''[7] उपरोक्त कथन मुस्लिम समाज की मानसिकता का चित्रण करता है। पाकिस्तान के जीतने पर सबको पान खिलाना घिनौनी और अलगाव की सोच का प्रतीक है। लेखक कई जगहों पर ऐसे ही व्यंग्य कसते हैं।

भारत का संविधान सबको बराबरी का हक देता है, परंतु विभिन्न संप्रदाय इसे भी संदेह की दृष्टि से देखते हैं। इसका वर्णन बिस्मिल्लाह जी ने अपने उपन्यास 'मुखड़ा क्या देखें' में किया है, ''नेहरू के संविधान में तो सबकी हिस्सेदारी बराबर–बराबर है। कल कोई टंटा खड़ा हुआ तो उसका भुगदंड कौन भोगेगा ? क्या नेहरू आएंगे भोगने। भोगेगा तो हमारा समाज ही न।''[8]

सांप्रदायिकता की आड़ में ऐसे ऐसे काम किए जाते हैं। जिसका बालक मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। समाज एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण कर देता है, जो सांप्रदायिकता की भावना से ओतप्रोत बन जाये। इसका एक उदाहरण दृष्टतव्य है, ''नहीं अब्बा यह बात नहीं है, बुद्दु ने सिसकते हुए कहा और उठकर बैठ गया। हमारे स्कूल में न शाम को 'शाखा' लगती है, मुझे उसमें जाने नहीं देते। कहते हैं, तुम मियां हो 'शाखा' में तुम्हारा क्या काम और अब सारे लड़के हमें मियां मियां,मुसल्ला, कटवा करके चढ़ाते हैं बहुत पूरी–पूरी गालियां बकते हैं। मैं अब स्कूल नहीं जाऊंगा।''[9]

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य के अध्ययन के उपरांत यथार्थ रूप से यह कहा जा सकता है कि अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने कथा साहित्य में सांप्रदायिकता का यथार्थ चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। अब्दुल बिस्मिल्लाह ने अपने यथार्थ जीवन के अनुभव व अपनी रचनात्मक लेखन कला के माध्यम से समाज में सामान्य व्यक्ति के जीवन में आने वाली सांप्रदायिक समस्याओं को उजागर किया है। अतः हम कह सकते हैं कि अब्दुल बिस्मिल्लाह की रचनात्मक दृष्टि समाज के मुद्दों से हमें परिचित कराती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन– हमारी विरासत (अनु० विजय मल्होत्रा), पृ०सं० 100
- अब्दुल बिस्मिल्लाह– झीनी झीनी बीनी चदरिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम–1986 पृ०सं० 194

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 11, Nov 2022

- अब्दुल बिस्मिल्लाह– अतिथि देवो भवः, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990, पृ०सं० 125
- अब्दुल बिस्मिल्लाह– झीनी झीनी बीनी चदरिया, नई दिल्ली, प्रथम–1986, पृ०सं० 161
- अब्दुल बिस्मिल्लाह– दंतकथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम–1990, पृ०सं० 33
- अब्दुल बिस्मिल्लाह– झीनी झीनी बीनी चदरिया, नई दिल्ली, प्रथम–1986, पृ०सं० 179
- वही– पृ०सं० 156
- अब्दुल बिस्मिल्लाह– मुखड़ा क्या देखे, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम–1996, पृ०सं० 27
- वही– पृ०सं० 127